डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना) किस्म की विशेषताएं

उत्तरी मैदानी क्षेत्र के लिए गेँहू की उन्नत किस्म

उपयुक्त क्षेत्र

यह प्रजाति पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिविज़नों को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मण्डल को छोड़कर), हिमाचल प्रदेश (ऊना व पाउंटा घाटी), जम्मू–कश्मीर के कुछ हिस्सों (जम्मू और कठुआ जिले) और उत्तराखण्ड (तराई क्षेत्र) के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुआई के लिए उपयुक्त है। यह किस्म उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए पहले ही अभिसूचित की जा चुकी है।

डीबीडब्ल्यू 187 की विशेषताऐं

	सीमा	औसत
बाली निकलने की अवधि	94–103	99
परिपक्वता की अवधि	139–157	148
पौध की ऊँचाई	104–106	105
1000 दानों का भार	38–49	44

Agrisearch with a human touch

AARONMedia 098964 33225

प्रकाशक :

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, 132001 भारत

किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री)
1800 180 1891

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

विस्तार फोल्डर : 77/2019

डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना)

उत्तरी मैदानी क्षेत्र के लिए गेहूँ की उन्नत किस्म

संकलन व संपादन

हनीफ खान, ओम प्रकाश, रवीश चतरथ, सतीश कुमार, विकास गुप्ता, चन्द्र नाथ मिश्रा, एच.एम.मम्रूथा, पूनम जसरोटिया, एस.सी. भारद्वाज, पी.एल. कश्यप, ओ.पी. गंगवार, राज कुमार, मदन लाल एवं जी.पी. सिंह

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल, 132001 भारत
ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research
Karnal-132001 INDIA

वेबसाईट : www.iiwbr.org | कृषक हैल्पलाईन नः (टोल फ्री) 1800 180 1891

डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना)

उत्तरी मैदानी क्षेत्र के लिए गेँहू की उन्नत किस्म

उत्पादकता

डीबीडब्ल्यू 187 किस्म से 61.3 कु. / हेक्टेयर औसत पैदावार मिलती है जो कि पूर्व की लोकप्रिय किस्म एचडी 2967 से 6.3 प्रतिशत एचडी 3086 से 3.9 प्रतिशत तथा अधिक पाई गई है।

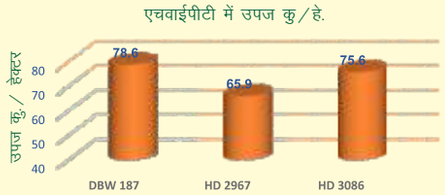

डीबीडब्ल्यू 187 किस्म द्वारा समय से बाई गई अवस्था में पैदावार की अधिकतम क्षमता 72.1 कु/हेक्टेयर पायी गई हैं। 25 अक्टूबर की अगेती बुवाई वाले एचवाईपीटी परीक्षण जिसमें 150 प्रतिशत एनपीके (225 किलो नाइट्रोजनःः90 किलो फॉस्फोरस : 60 किलो पोटाश प्रति हे.) और ग्रोथ नियामकों यथा क्लोरमाक्वेट क्लोराइड (लिहोसिन) @ 0.2 % (2 मिली 1 लीटर पानी में) + टेबुकोनाज़ोल (फॉलिकर 43% SC) @ 0.1 % की दर से (1 मिली 1 लीटर पानी में) फर्स्ट नोड और फ्लैग लीफ अवस्था पर प्रयुक्त किया गया उसमें डीबीडब्ल्यू 187 की पैदावार अधिकतम 96.6 कु./हे. व औसत 78.6 कु/हे पायी गयी।

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता (उत्तरी मैदानी क्षेत्र)

यह प्रजाति पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिविज़नों को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मण्डल को छोड़कर), हिमाचल प्रदेश (ऊना व पाउंटा घाटी), जम्मू–कश्मीर के कुछ हिस्सों (जम्मू और कठुआ जिले) और उत्तराखण्ड (तराई क्षेत्र) के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुआई के लिए उपयुक्त है। यह किस्म उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए पहले ही अभिसूचित की जा चुकी है।

भूमि का चुनाव एवं तैयारी

समतल उपजाऊ मिट्टी का चुनाव करके, जुताई पूर्व सिंचाई के बाद उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी के लिए डिस्क हैरो, टिलर और भूमि समतल करने वाले यंत्र के साथ जुताई करके खेत को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए।

बीज उपचार

विटावैक्स (कार्बोक्सिन) नमक कवकनाशी की 2.0 ग्राम/किलोग्राम से बीज उपचारित करना चाहिए।

बुआई का समय

25 अक्टूबर – 15 नवम्बर

बीज दर और अंतराल

कतारों में बुआई के लिए 40 किलोग्राम/एकड़ मात्रा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से.मी. तथा पौधे के बीच की दूरी 5 से.मी. रखनी चाहिए।

उर्वरको की मात्रा एवं उपयोग का समय

24 किग्रा. फास्फोरस 16 किग्रा. पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 60 किग्रा. मात्रा का 1/3 भाग बीजाई के समय तथा नत्रजन की शेष 2/3 मात्रा दो भागों में बुआई के 35–40 दिनों बाद प्रयोग करना चाहिए। अनुशंसित एनपीके के 150 % (1.5 गुना) खुराक के तहत सर्वश्रेष्ठ उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

खरपतवार नियंत्रण

पेंडिमथेलिन नाम अंकुरण–पूर्व खरपतवारनाशी की 400 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ की दर से बीजाई के 0–3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4–डी नामक दवा की 200 ग्राम/एकड़ या मेटसल्फ्युरॉन 1.6 ग्राम/ एकड़ या कारफेंट्राज़ोन 8 ग्राम/एकड़ नामक दवा को 120 लीटर पानी में का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है।

संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफोप 24 ग्राम या फेनोक्षाप्रोप 40 ग्राम/एकड़ सल्फ़ोसल्फ्युरॉन की 10 ग्राम/एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।

मिश्रित खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4–डी या मेटसल्फ्युरॉन को सल्फ़ोसल्फ्युरॉन या आईसोप्रोटुरॉन के साथ बुआई के 30–35 दिनों बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी की अवस्था पर अनुक्रमिक छिड़काव किया जाना चाहिए।

रोग एवं कीट नियंत्रण

डीबीडब्लू 187 पीला रतुआ और भूरा रतुआ के लिए प्रतिरोधी है परंतु यदि फसल में पीला एवं भूरा रतुआ, करनाल बंट या चूर्णील फफूंदी रोग के लक्षण दिखाई दे तो उसके नियंत्रण हेतु प्रोपिकोनजोल नामक दवा की 0.1 प्रतिशत (1.0 मिली/लीटर) मात्रा का 15 दिनों के अंतराल पर का दो बार छिड़काव करना चाहिए।

माहू या चेंपा नमक कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल की 40 मि.ली./एकड़ मात्रा का छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई

फसल में सामान्यतः 4 से 6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। जिसमें पहली सिंचाई 20 से 25 दिन बाद तथा उसके बाद 20 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

कटाई

किस्म कटाई के लिए 139–157 दिन (औसत 148 दिन) में तैयार हो जाती है।

अनुमानित उपज

किस्म की औसत उपज 24.5 कु. प्रति एकड़।

डी बी डब्ल्यू 187 की फसल

डी बी डब्ल्यू 187 के दाने